7. मुर्गी की खाद खेत में डालने के बाद किसी और खाद की जरूरत कम होती है, क्योंकि यह खाद जीवाणुओं से प्राप्त होती है। अतः किसान द्वारा खाद की जरूरत की पूर्ति मुर्गियों से प्राप्त खाद से की जा सकती है तथा अतिरिक्त आमदनी के लिए बेची भी जा सकती है। इस खाद से भूमि की रासायनिक एवं भौतिक दशा में भी सुधार होता है।
8. किसान छोटे स्तर पर यानी 1500 मुर्गियों से लेयर फार्मिंग की शुरुआत करते हैं तो 50 हजार से 1 लाख रुपये प्रति महीना तक बड़े आसनी से कमा सकते हैं।

प्रशासनिक भवन

शैक्षणिक भवन

विशेष जानकारी हेतु सम्पर्क करें:
निदेशक प्रसार शिक्षा
प्रसार शिक्षा निदेशालय
दूरभाष : 0510-2730808
ई–मेल : directorextension.rlbcau@gmail.com

प्रकाशित:
कुलपति
रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
झाँसी 284003, उत्तर प्रदेश (भारत)

मुद्रक : क्लासिक इण्टरप्राइजेज, झाँसी. 7007122381

प्र.शि.नि./त.प्र.सा.-फोल्डर/2024/98

बुन्देलखण्ड में कुक्कुट पालन का महत्व एवं सम्भावनायें

अमित सिंह विशेन
गौरव कुमार
प्रमोद कुमार सोनी
एवं
वी.पी. सिंह

पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय

प्रसार शिक्षा निदेशालय
रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
झाँसी 284003, उत्तर प्रदेश (भारत)
वेबसाईट : www.rlbcau.ac.in

भारत में किसानों के लिए कृषि के अलावा अतिरिक्त आमदनी के लिए कुक्कुट पालन एक बेहतर जरिया है। कुक्कुट पालन भारत में उभरता हुआ स्वरोजगार है। यह किसानों की आर्थिक अवस्था सुधारने का एक महत्वपूर्ण साधन है। इससे कम समय व कम व्यय में अधिक आय प्राप्त की जा सकती है।

हमारे देश में 2021–22 की तुलना में 2022–23 में अंडे का उत्पादन 6.77 प्रतिशत बढ़ा है और कुक्कुट माँस का उत्पादन 4.52 प्रतिशत बढ़ा है। हमारे देश में अभी प्रति व्यक्ति अंडा व माँस सेवन अन्य विकासशील पश्चिमी देशों की तुलना में बहुत ही कम है। अतः भारत में कुक्कुट पालन से रोजगार की विपुल सम्भावनायें हैं। बढ़ती आबादी, खाद्यान आदतों में परिवर्तन, औसत आय में वृद्धि, बढ़ती स्वास्थ्य सचेतता व तीव्र शहरीकरण कुक्कुट पालन के भविष्य को स्वर्णिम बना रहे हैं।

बुन्देलखण्ड में कुक्कुट पालन के महत्वः

1. भारत में रहने वाली ग्रामीण आबादी कुल आबादी का 72.22 प्रतिशत हैं जिसमें मुख्य रूप से गरीब, सीमांत किसान और भूमिहीन मजदूर हैं। कुक्कुट क्षेत्र इन लोगों को अपने जीवन स्तर को ऊपर उठाने के लिए रोजगार और कमाई की आधार रेखा प्रदान करता है और इस प्रकार भारत की अर्थव्यवस्था में एक बहुत बड़ा योगदान देता है। नकद आय के एक महत्वपूर्ण पूरक स्रोत के रूप में कुक्कुट पालन लगभग 89 प्रतिशत ग्रामीण पशुपालकों द्वारा किया जाता है।
2. भारत में कुपोषण एवं गरीबी की समस्या को दूर करने के लिए बैकयार्ड (पारिवारिक) कुक्कुट पालन की पद्धति को अपनाया जा सकता है। इसमें प्रायः 5–20 मुर्गियों का छोटा सा समूह एक परिवार के द्वारा पाला जाता है, जो घर एवं उसके आस–पास में अनाज के गिरे दाने, झाड़–फूसों के बीच

चित्र : बैकयार्ड (पारिवारिक) कुक्कुट पालन

कीड़े–मकोड़े, घास की कोमल पत्तियाँ तथा घर की जूठन आदि खाकर अपना पेट भर सकती हैं। इसके अतिरिक्त, बैकयार्ड (पारिवारिक) कुक्कुट पालन में वृद्धि से घरेलू खाद्य सुरक्षा पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। यह बहुत फायदेमंद है क्योंकि यह बहुत कम पूंजी निवेश के साथ कम से कम समय में पूरक आय प्रदान करता है।

3. ग्रामीण लोगों के मुख्य खाद्य में, आमतौर पर प्रोटीन की कमी होती है इसीलिए ग्रामीण कुक्कुट पालन के द्वारा प्राप्त अंडे और माँस से आसानी से पचने योग्य प्रोटीन की उपलब्धता बढ़ाई जा सकती है।
4. ग्रामीण कुक्कुट पालन का उद्देश्य घर–आँगन में उपलब्ध मानव उपभोग हेतु अनुपयुक्त अपशिष्ट अथवा प्राकृतिक खाद्यों (कीड़े, चींटियां, गिरने वाले अनाज, हरी घास, रसोई अपशिष्ट इत्यादि) को पौष्टिक अंडे और कुक्कुट माँस में परिवर्तित किया जा सकता है, जो मानव उपभोग के लिए अत्यधिक पौष्टिक खाद्य स्रोत के रूप में उपयुक्त होगा।
5. मुर्गी के मल (विष्ठा) का उपयोग बटन मशरूम उत्पादन हेतु कम्पोस्ट बनाने तथा खाद के रूप में खेतो में प्रयोग से फसल की उत्पादकता में बढ़ोत्तरी होती है।
6. ग्रामीण कुक्कुट पालन से न्यूनतम निवेश लागत के साथ अतिरिक्त आय प्रदान करके महिला सशक्तिकरण में सहायता की जा सकती है।